MP Board Class 9th Hindi Navneet Solutions पद्य Chapter 3 प्रेम और सौन्दर्य

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
'सुजान अनीत करौ' से कवि का क्या तात्पर्य
उत्तर:
कवि का तात्पर्य यह है कि हे प्रेमिका सुजान! ऐसा अनीति का कार्य मत करो कि मैं तुम्हारे दर्शन के लिए लालायित रहता हूँ और तुम मुझे जरा भी दर्शन नहीं देती हो।

प्रश्न 2.
प्रेम के मार्ग के विषय में कवि का क्या मत है?
उत्तर:
प्रेम के मार्ग के विषय में कवि का मत है कि यह मार्ग बहुत ही सहज और सरल है इसमें सयानापन नहीं चलता है।

प्रश्न 3.
प्रिय के बोलने में कवि को किस की वर्षा होती दिखाई देती है?
उत्तर:
प्रिय के बोलने में कवि को फूलों की वर्षा होती दिखाई देती है।

प्रश्न 4.
मोहनमयी कौन हो गई है?
उत्तर:
राधा मोहनमयी हो गई है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
कवि ने सुजान का नाम लेकर क्यों उलाहना दिया है?
उत्तर:
कवि ने सुजान का नाम लेकर उलाहना इसलिए दिया है कि पहले तो वह घनानन्द से बहुत प्रेम करती थी पर बाद में वह उसकी उपेक्षा करने लगी थी। पर कवि के मन में उसके लिए पहले जैसा ही प्यार था।

प्रश्न 2.
कवि ने स्नेह के मार्ग को किस तरह का बताया है और क्यों?
उत्तर:
कवि ने स्नेह के मार्ग को सहज और सरल बताया है उसमें सयानेपन को कहीं भी स्थान नहीं है। जो सच्चे प्रेमी होते हैं वे अपनापन भूलकर उस मार्ग पर चलते हैं जबकि कपटी लोग इस पर चलने में झिझकते हैं।

प्रश्न 3.
"दोउन को रूप-गुन दोउ वरनत फिरै" की स्थिति में कौन-कौन हैं और क्यों?
उत्तर:
दोउन को रूप-गुन में श्रीकृष्ण एवं श्रीराधाजी हैं। वे दोनों एक-दूसरे के रूप की परस्पर सराहना करते हैं और दोनों एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं, अलग नहीं होते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
घनानन्द की विरह वेदना को अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर:
घनानन्द प्रेम के कवि हैं। उन्होंने प्रेम के संयोग और वियोग के सुन्दर चित्र उतारे हैं। उनकी वियोग पीड़ा मानव के हृदय के अन्तरतम का स्पर्श करती है। सहृदय पाठक इसको पढ़कर विरह वेदना की भावुकता का अनुभव करने लग जाता है। नायिका अपने प्रियतम की प्रतीक्षा सांझ से लेकर भोर तक करती है, वह सब कुछ न्यौछावर करके भी अपने प्रिय के पास पहुँचना चाहती है। उनकी यह विरह वेदना अलौकिक इष्ट तक पहुँचने का साधन है।

प्रश्न 2.
घनानन्द के प्रिय के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
घनानन्द ने अपने प्रिय के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहा कि उसका मुख मंडल सुशोभित है, वह गौरवर्ण तथा विशाल नेत्र वाला है, उसके हँसने में फूलों की वर्षा होती है। उसके बालों की लटें गालों पर गिरकर बहुत शोभा पा रही हैं। इस प्रकार प्रिय के अंग-प्रत्यंग में कान्ति की तरंगें हिलोरें ले रही हैं।

प्रश्न 3.
श्रीकृष्ण की बाल छवि का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
कविवर देव ने श्रीकृष्ण की बाल छवि का वर्णन करते हुए कहा है कि उनके पैरों में सुन्दर नूपुर बज रहे हैं, कमर से करधनी की मधुर ध्वनि सुनाई दे रही है। उनके साँवले रंग पर पीला वस्त्र और गले में वनमाला शोभा दे रही है। उनके माथे पर मुकुट है, उनके नेत्र बड़े चंचल हैं तथा मुख पर हँसी चन्द्रमा की चाँदनी जैसी लग रही है।

प्रश्न 4.
राधा और श्रीकृष्ण के संयोग की स्थिति में उनके हाव-भावों का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर:
राधा और श्रीकृष्ण संयोग की स्थिति में परस्पर एक-दूसरे से वार्तालाप करते हैं, कभी-कभी हँसी का ठहाका लगाते हैं। दीर्घ श्वास लेकर हे देव! हे देव! पुकारते हैं। कभी वे पंजों के बल पर खड़े होकर आश्चर्य में डूब जाते हैं। उन दोनों का मन एक-दूसरे में रच-पच गया है। श्रीकृष्ण का मन राधामय हो गया है और श्रीराधा का मन कृष्णमय हो गया है। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे में समा गये हैं।

प्रश्न 5.
निम्नलिखित काव्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए-
(अ) झलकै अति ..... जाती है है।
उत्तर:
कविवर घनानन्द कहते हैं कि नायिका का गौरवर्णी मुख अत्यधिक सुन्दरता से झलमला रहा है। प्रियतम के नेत्र

https://www.evidyarthi.in/

प्रियतमा के कान तक फैले हुए विशाल नेत्रों की सुन्दरता को देखकर तृप्त हो गये हैं। कहने का भाव यह है कि वह नायिका विशाल नेत्रों वाली है। वह नायिका जब मुस्कराकर बोलती है और हँसकर बातें करती है तो ऐसा लगता है मानो फूलों की वर्षा उसके वक्षस्थल पर हो रही है। हिलते हुए केशों की लटें नायिका के कपोलों पर क्रीड़ा कर रही हैं। उनका सुन्दर कंठ दो कमल पंक्तियों में बदल जाता है। उस नायिका के अंग-प्रत्यंग में कान्ति की लहरें उत्पन्न हो रही हैं। उससे ऐसा लगता है कि मानो उसका रूप इसी क्षण पृथ्वी पर टपकने वाला हो रहा है।

(ब) साँझ ते ..... औसर गारति।
उत्तर:
कविवर घनानन्द कहते हैं कि बाबली प्रेमिका प्रात:काल से लेकर सन्ध्या काल तक वन-उपवन की ओर देखती रहती है। वह वन की ओर गये हुए अपने प्रियतम के लौट आने की प्रतीक्षा में है, वह इस कार्य में तनिक भी थकान का अनुभव नहीं करती है। वह सांयकाल से लेकर प्रात:काल तक अपनी आँखों के तारों से आकाश के तारागणों को टकटकी लगाकर देखती रहती है और जब कभी उसे अपना प्रिय दिखाई दे जाता है तो उसे अत्यधिक आनन्द का अनुभव होने लगता है और इसी समय प्रसन्नता के आँसू भी गिरना आरम्भ कर देते हैं। सामने खड़े हुए मोहन को देखने की उत्कट अभिलाषा नायिका के नेत्रों और मन में प्रत्येक क्षण समाई रहती है। नायक से भेंट न होने की दशा में उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता है।

(स) अति सूधो ..... छटाँक नहीं।
उत्तर:
कविवर घनानन्द कहते हैं कि प्रेम का मार्ग अत्यधिक सहज और सरल होता है उसमें सयानेपन की जरा भी गुंजाइश नहीं होती है। इस प्रेम मार्ग में सच्चे लोग अपनापन छोड़कर अर्थात् सर्वस्व त्याग की भावना से चलते हैं.और जो कपटी तथा चालबाज होते हैं वे इस पर चलने में झिझकते हैं। कवि कहता है कि हे प्यारे सुजान! तुम अच्छी तरह सुन लो, हमारे मन में तुम्हारे अतिरिक्त और किसी का नाम भी नहीं है। हे लाल! तुम ये कौन-सी पट्टी पढ़कर आये हो कि हमारा तो पूरा मन अपने वश में कर लेते हो और हमें अपने रूप का जरा भी दर्शन नहीं कराते हो।

काव्य-सौन्दर्य

प्रश्न 1.
घनानन्द के छन्दों की भाषागत विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर:
कविवर घनानन्द ने अपनी कविता में कवित्त, दोहा और सवैया आदि छन्दों का प्रयोग किया है। उनके छन्दों में ब्रज-भाषा का शुद्ध साहित्यिक रूप प्रयुक्त हुआ है। ब्रजभाषा में भी आपने कहावतों और मुहावरों के प्रयोग द्वारा भाषा में चार चाँद लगा दिए हैं। उनके छन्दों की भाषा भावानुकूल एवं मधुर व्यंजना वाली है। भाषा में सरसता, मधुरता एवं प्रभावोत्पादकता पाई जाती है।

प्रश्न 2.
निम्नलिखित काव्यांश में अलंकार पहचान कर लिखिए

1. अंग-अंग ..... धर च्वै।
2. सांझ ते ..... न टारति।
3. मोहन-सोहन ..... उर आरति।
4. तुम कौन धौं ..... छटाँक नहीं।

उत्तर:

1. उत्प्रेक्षा अलंकार
2. अनुप्रास अलंकार
3. अनुप्रास एवं पदमैत्री
4. श्लेष अलंकार।

प्रश्न 3.
निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य प्रयोग कीजिए
उत्तर:

1. अनीति करना-घनानन्द की प्रेमिका सुजान ने घनानन्द के साथ अनीति की थी।
2. हा-हा खाना-घनानन्द अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए हा-हा खाता रहता था।
3. दुहाई देना-घनानन्द अपनी प्रेमिका के सामने अपने अनन्य प्रेम की दुहाई दिया करता था।
4. टेक लेना-जब किसी का कार्य बिगड़ने लगता है तो वह व्यक्ति दूसरों की टेक लिया करता है।
5. प्यासा मारना-घनानन्द कवि अपनी प्रेमिका से कहते हैं कि तुम तो मेरे जीवन की मूल हो फिर तुम मुझे प्यासा क्यों मार रही हो।
6. बाँकन होना (नाम भर को भी क्षुद्रता न होना)-सच्चे प्रेम में तनिक भी सयानापन अथवा बाँक नहीं होना चाहिए।
7. मन लेना-प्रेमिका सुजान ने घनानन्द का मन तो ले लिया था पर उसे अपने रूप की छटा का एक अंश भी नहीं दिखाना चाहती है।

प्रश्न 4.
निम्नलिखित ब्रजभाषा शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए
पाँयनि, हिये, छके, सूधौ, धौ।
उत्तर:

शब्द	हिन्दी मानक रूप
पाँयनि	पैरों
हिये	हृदय
छके	तृप्त होना
सूधौ	सीधा
धौ	सी

प्रश्न 5.
घनानन्द और देव के छन्दों में कौन-सा रस है?
समझाकर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
घनानन्द कवि ने वियोग श्रृंगार का अधिक वर्णन किया
है जबकि देव कवि ने वात्सल्य रस का।

https://www.evidyarthi.in/